बहाउल्लाह की रचनाओं से

हे संसार के लोगों ! जब मेरे सौंदर्य का सूर्य अस्त हो जाये और मेरे मंडपवितान का स्वर्ग तुम्हारी आँखों से ओझल हो जाये तब तुम दुःखी न होना। तुम मनुष्यों के बीच मेरे धर्म के प्रचार तथा मेरी वाणी के प्रसार के लिये उठ खड़े होना। हम तुम्हारे साथ हर पल हैं और सत्य की शक्ति के सहारे तुम्हें दृढ़ता प्रदान करेंगे। सत्यतः, हम सर्वशक्तिमान हैं। जिस किसी ने हमें पहचान लिया है वह उठ खड़ा होगा और मेरी सेवा इस निश्चय के साथ करेगा कि पृथ्वी और स्वर्ग की तमाम शक्तियाँ भी उसके उद्देश्य को पराजित करने में असमर्थ होंगी।[1]

☆☆☆

हे लोगों, जब मेरी उपस्थिति की महिमा समेट ली जाये और मेरी वाणी का महासागर स्थिर हो जाये तब अपने हृदय को व्याकुल मत होने देना। तेरे बीच मेरी उपस्थिति में एक प्रज्ञा है और मेरी अनुपस्थिति में भी है एक विवेक, जो अतुलनीय, सर्वज्ञ ईश्वर के अतिरिक्त सब की समझ से परे है। सत्यतः, हम अपनी महिमा के साम्राज्य से तुम्हें देख रहे हैं और जो कोई भी हमारे धर्म की विजय

के लिये उठ खड़ा होगा उसकी सहायता हम स्वर्ग के देवदूतों और अपने चुने हुये लोगों के माध्यम से करेंगे।[2]

☆☆☆

क्या तुम यह सोचते हो कि उसकी महान इच्छा को फलीभूत होने से रोकने, उसके अपने न्याय को लागू करने से अवरूद्ध करने अथवा उसे अपनी प्रभुसत्ता का उपयोग करने में बाधा पहुँचाने की शक्ति तुममें है? यह तुम्हारी मिथ्या कल्पना है कि स्वर्ग में अथवा पृथ्वी पर उसके धर्म को बाधित किया जा सकता है। नहीं, कदापि नहीं, उसकी सौगंध जो शाश्वत सत्य है ! सम्पूर्ण सृष्टि में कुछ भी ऐसा नहीं है जो उसके उद्देश्य को पूरा होने से रोक सकता है...

इसके अतिरिक्त, तुम यह भी जान लो कि ईश्वर ने अपनी ही आज्ञा से उन सबकी रचना की है जो स्वर्ग में अथवा पृथ्वी पर हैं। फिर कैसे उसके आदेश से रची गई चीज उसके विरोध में जा सकती है ?[3]

☆☆☆

प्रभु के न्याय की सौगंध ! इस युग में जो भी अपना मुख प्रभु के गुणगान में खोलता है और अपने स्वामी के नाम की चर्चा करता है उसके ऊपर मेरे नाम के स्वर्ग से दिव्य–प्रेरणा की वर्षा होगी। उसकी सहायता स्वर्ग के निवासी करेंगे, उनमें से प्रत्येक के पास पवित्र प्रकाश की

मशाल होगी। प्रभु के प्रकटीकरण का यही आदेश है। यह सब सर्वशक्तिशाली, सर्वोपरि प्रभु की आज्ञा से ही सम्भव हो पाया है।[4]

☆☆☆

हमारे धर्म का संदेश देने के लिये जिन्होंने अपना देश छोड़ दिया है उन्हें 'आज्ञाकारी आत्मायें' शक्ति प्रदान करेंगी। उनके साथ हमारे चुने हुये देवदूत जायेंगे, जैसा कि सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञ प्रभु द्वारा आदेशित है। जो सर्वशक्तिशाली की सेवा का सम्मानजनक अवसर प्राप्त करते हैं उन्हें महान वरदान प्राप्त होता है।[5]

☆☆☆

वह परम् सौभाग्यशाली है जिसने इस युग में मनुष्यों द्वारा उपयोग की जा रही आरामदायी चीजों का परित्याग कर दिया है और उसकी ओर दृढ़ता के साथ उन्मुख हुआ है जो ईश्वर, सभी नामों के स्वामी तथा सभी सृजित वस्तुओं के सृजनकर्ता द्वारा आदेशित है, वह जो सर्वमहान नाम की शक्ति के सहारे शाश्वत स्वर्ग से अवतरित हुआ है और ऐसे अपराजेय अधिकार से विभूषित किया गया है जिसका विरोध करने में पृथ्वी की समस्त शक्तियाँ भी असमर्थ है। परम महान स्थान से आह्वान करता मातृ ग्रन्थ इसका साक्षी है।[6]

☆☆☆

इस प्रताड़ित की महालेखनी को दिया जाने वाला यह सर्वमहान, सर्वाधिक आनन्ददायक संदेश है। हे मेरे परम प्रिय लोगो ! तुम क्यों भय करते हो ? वह कौन है जो तुम्हें उदास कर देता है। नमी का एक स्पर्श मात्र पर्याप्त है उस सख्त मिट्टी को घुला देने के लिये जिससे इस दिग्भ्रमित पीढ़ी को आकार दिया गया है। मात्र तुम्हारे एकत्रित हो जाने से इन दम्भी और तुच्छ लोगों की ताकत को ढ़ेर कर दिया जायेगा।[7]

☆☆☆

साहस और शक्ति का स्त्रोत भगवद्वाणी का प्रसार है तथा है उसके प्रेम में अटल रहना।[8]

☆☆☆

वह सत्यतः उसकी सहायता करेगा जो उसकी (ईश्वर) सहायता करता है और उसे याद रखेगा जो उसका (ईश्वर का) स्मरण करता है। इसकी साक्षी यह पाती है जिसने तुम्हारे परम् महिमावंत, परम् प्रभावकारी प्रभु की प्रेमपूर्ण कृपा–वर्षा की है।[9]

☆☆☆

हमारे मुख से निकला हुआ प्रत्येक अक्षर ऐसी परिवर्तनकारी शक्ति से सम्पन्न है कि नई सृष्टि अस्तित्व में लायी जा सके। इसका परिणाम ईश्वर के अतिरिक्त अन्य सबके लिये अबूझ है। उसे सत्य ही सभी वस्तुओं का ज्ञान है।[10]

☆☆☆

यदि हमारी इच्छा हो तो हम हवा में उड़ती हुई धूल के एक कण को एक पलक के झपकने से भी कम समय में असीम, अकल्पनीय प्रभावान सूर्यों को उत्पन्न करने में समर्थ कर सकते हैं, ओस की एक बूंद असंख्य महासमुद्रों में परिणित हो सकती है। प्रत्येक अक्षर को ऐसी शक्ति से भर सकते हैं कि वह बीते हुए और आनेवाले युगों के सम्पूर्ण ज्ञान को प्रकट करने में समर्थ हो।[11]

☆☆☆

हम ऐसी शक्ति से सम्पन्न है कि वह, अगर प्रकाश में लाई गई, तो सबसे अधिक घातक विषों को भी अचूक सर्वरोगनाशक औषधि में परिवर्तित कर देगी।[12]

☆☆☆

कहो : हे बहा के लोगो, सतर्क रहो ताकि पृथ्वी के शक्तिशाली लोग तुमसे तुम्हारा बल न हर लें अथवा वे जो संसार पर शासन करते हैं, तुम में भय न भर दें। ईश्वर में आस्था रखो और अपने कार्य उसकी देखदेख में सौंप दो। वह वास्तव में, सत्य की शक्ति द्वारा तुम्हें विजयी बनायेगा और वह वास्तव में ही अपनी इच्छानुसार कार्य करने में समर्थ है और उसकी पकड़ में है सर्वसमर्थ पराक्रम की रास।[13]

☆☆☆

ईश्वर के न्याय की सौगंध, यदि एक नितान्त अकेला व्यक्ति भी बहा के नाम पर खड़ा हो जाये और उसके प्रेम का कवच धारण कर ले तो सर्वशक्तिमान उसे विजयी बनाएगा भले ही त्रिलोक की शक्तियाँ उसके विरूद्ध मोर्चा बाँध कर खड़ी हों।[14]

☆☆☆

वह ईश्वर साक्षी है, जिसके अतिरिक्त दूसरा कोई ईश्वर नहीं, अगर कोई हमारे धर्म की विजय के लिए खड़ा होगा तो ईश्वर उसे विजय प्रदान करेगा यद्यपि उसके विरूद्ध लाख–लाख शत्रु संगठित हों। अगर मेरे लिये उसका प्रेम प्रबल हो तो ईश्वर पृथ्वी और स्वर्ग की समस्त शक्तियों पर उसका प्रभुत्व स्थापित करेगा। इस तरह हमने सभी क्षेत्रों में क्षमता की गहरी अनुभूति का प्रवेश करवाया है।[15]

☆☆☆

बाब की रचनाओं और उक्तियों से

ईश्वर के अतिरिक्त प्रत्येक बंधन के आकर्षण से तुम स्वयं को मुक्त करो, उसके अतिरिक्त सभी का परित्याग कर स्वयं को ईश्वर में समृद्ध करो तथा इस प्रार्थना का पाठ करो :

"कहो, ईश्वर सर्वोपरि परिपूरक है ! स्वर्ग और धरती पर और जो भी उनके बीच स्थित है, सब पूरा करता है ईश्वर ! सच वह स्वयं में ज्ञाता, अवलम्बनदाता और सर्वशक्तिशाली है।"

ईश्वर की सर्वोपरि परिपूरक शक्ति को व्यर्थ भ्रांति मत समझो। यह वह यथार्थ आस्था है जिसकी कामना तुम प्रत्येक युग में ईश्वर के अवतार के प्रति करते हो। यह वह विश्वास है जो उन सभी वस्तुओं से अधिक परिपूर्ण है जिनका पृथ्वी पर अस्तित्व है, जबकि आस्था के अतिरिक्त पृथ्वी पर सृजित कोई वस्तु तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं है। अगर तुम आस्थावान नहीं हो तो दिव्य सत्य का वृक्ष तुम्हें नष्ट होने का दण्ड देगा। अगर तुम आस्थावान हो तो तुम्हारी आस्था पृथ्वी पर अस्तित्व वाले सभी पदार्थों से श्रेष्ठतर होगी, यद्यपि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं हो।[16]

☆☆☆

कहो, सत्य ही इस धर्म का कोई भी अनुयायी, ईश्वर की अनुमति से, स्वर्ग और पृथ्वी तथा इनके मध्य में निवास करने वाले सभी लोगों पर विजयी हो सकता है, क्योंकि यह निःसंदेह एक वास्तविक धर्म है। अतः, तुम डरो मत और दुःखी न हो।

कहो, जैसा कि ग्रंथ में प्रकट किया गया है, सत्य के किसी एक अनुयायी की एक सौ दूसरी आत्माओं पर विजय तथा एक सौ अनुयायियों का एक सहस्त्र नास्तिकों पर प्राधान्य और एक सहस्त्र आस्थावानों का इस पृथ्वी की सभी जातियों और सगोत्रों पर आधिपत्य स्थापित करने का दायित्व स्वयं ईश्वर ने लिया है, क्योंकि जिसकी भी इच्छा वह करता है उसे अपनी आज्ञा से अस्तित्व में लाता है। वह सत्य ही, सभी पदार्थों पर प्रबल है।

कहो, ईश्वर की शक्ति उनके हृदयों में निवास करती है जो ईश्वर के एकत्व में विश्वास रखते हैं तथा इसके साक्षी हैं कि उसके सिवाय दूसरा कोई ईश्वर नहीं है और जो दूसरों को ईश्वर का भागीदार बनाते हैं, उनके हृदय असमर्थ हैं, इस पृथ्वी पर उनके जीवन शून्य के समान हैं, वे निश्चय ही मृत हैं।[17]

☆☆☆

जब अनन्त के क्षितिज पर बहा का सूर्य देदीप्यमान होगा, तब उसके सिंहासन के समक्ष अपने को प्रस्तुत करना तुम्हारा कर्त्तव्य है.....

उसकी उपस्थिति की खोज करने तथा उस उदात्त और यशस्वी पद को प्राप्त करने हेतु तुम्हें और सब को अस्तित्व प्रदान किया गया है। सचमुच ही, वह स्वर्ग से अपनी करूणा बरसायेगा, जिससे तुम्हारा कल्याण होगा और जो कुछ भी उसके द्वारा कृपापूर्वक दिया जायेगा वह तुम्हें सम्पूर्ण मानवजाति को छोड़ने की सामर्थ्य देगा। यह सच है कि उसकी इच्छा हो तो वह मात्र अपने एक शब्द से सभी संसार की वस्तुओं को पुनर्जीवन दे सकता है। वह सर्वोपरि है, सर्वसामर्थ्यशाली, सर्वशक्तिमान है।[18]

☆☆☆

परम् पुनीत है प्रभु जिसके हाथों में प्रभुत्व का स्त्रोत है। जिसकी भी वह इच्छा करता है उसका केवल 'हो जा' कह कर ही सृजन करता है और वह अस्तित्ववान हो जाता है। अब तक प्राधिकार की शक्ति उसकी रही है और इसके बाद भी उसकी रहेगी। अपने आदेश के प्रभाव द्वारा वह स्वेच्छा से किसी को भी विजयी बना देता है। वह अपनी ही प्रेरणा से प्रसन्न रहता है। सत्य ही वह समर्थ है, सर्वशक्तिमान है। संसार के अधिराज्यों और सृष्टि तथा इनके मध्य जो कुछ है उनमें सारी महिमा और ऐश्वर्य उसका है। सत्य ही, वह समर्थ है, तेजोमय है। अनन्त काल से वह अपराजेय बल का स्त्रोत है और अनन्तकाल तक ऐसा रहेगा। वह निश्चय ही बल और शक्ति का स्वामी है। स्वर्ग और पृथ्वी के समस्त अधिराज्यों तथा इनके मध्य जो कुछ है, ईश्वर का है तथा समस्त पदार्थों पर उसकी

शक्ति सर्वोपरि है। पृथ्वी और स्वर्ग तथा इनके मध्य की सारी सम्पदाएँ उसकी हैं तथा उसकी रक्षा का विस्तार समस्त पदार्थों तक है। वह परलोकों और पृथ्वी तथा इनके मध्य जो कुछ है, उसका स्रष्टा है और वह सत्य ही सभी पदार्थों का साक्षी है। परलोकों और पृथ्वी तथा दोनों के मध्य रहने वाले सभी को प्रतिफल देने में त्वरित है। परलोकों तथा पृथ्वी और इनके मध्य निवास करने वालों के लिये निर्दिष्ट माप वह नियत करता है। सत्य ही वह सर्वोपरि रक्षक है। स्वर्ग और पृथ्वी तथा इनके मध्य में प्रत्येक वस्तु पर उसका अधिकार है। स्वेच्छा से वह अपने निर्देश द्वारा उपहार देता है। निश्चय ही उसकी कृपा सभी को आबद्ध करती है और वह सर्वज्ञ है।[19]

☆☆☆

हे ईश्वर, तुम महिमामय हो, तुम परलोकों और पृथ्वी तथा इनके मध्य जो कुछ है उसके स्रष्टा हो। तुम सर्वोच्च स्वामी हो, परम पावन, सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ। तुम्हारा नाम काँतिमय हो, हे ईश्वर, उनको जिन्होंने तुम में तथा तुम्हारे चिन्हों में आस्था व्यक्त की है, उन पर अपनी विद्यमानता से ऐसी प्रबल सहायता भेज जिससे उनका मानवजाति पर व्यापक प्रभाव हो।[20]

☆☆☆

गुणगान हो तुम्हारा हे प्रभु ! अपने निर्देश से जिसे भी तुम चाहते हो उसे स्वर्ग और पृथ्वी तथा इनके मध्य के

गणों के माध्यम से विजयी बनाते हो। तुम संसार के स्वामी, शाश्वत और अपराजेय बल के स्वामी हो।[21]

☆☆☆

हे प्रभु ! जिन्होंने तुम्हारे सिवाय सभी कुछ त्याग दिया है, उन्हें महान विजय प्रदान कर। हे प्रभु, अपने सेवकों की सहायता करने और उन्हें सबल बनाने, सफलता प्राप्त करने, उनको अपने साथ लेकर चलने, उन्हें गौरव से मंडित करने, उन पर सम्मान और उत्कर्ष प्रदान करने, उन्हें समृद्ध बनाने और उन्हें विस्मयजनक विजय से विजयी होने के लिये स्वर्ग और पृथ्वी और इनके मध्य के देवदूतों को उन पर अवतरित कर।[22]

☆☆☆

हे ईश्वर ऐसे गणों को भेज जो तुम्हारे सेवकों को विजयी बनाएं। अपनी स्वेच्छा से तुम अपने निर्णय द्वारा सभी पदार्थों की रचना करते हो। तुम सत्य ही, संसार के स्वामी, स्रष्टा, सर्वज्ञ हो।[23]

☆☆☆

अपने दोषों और दुर्बलताओं की चिन्ता न करो; अपने प्रभु, सर्वशक्तिमान ईश्वर की अपराजेय सामर्थ्य पर अपनी दृष्टि दृढ़ करो। विगत दिनों में क्या उसने इब्राहिम को, उसकी असहाय स्थिति के बावजूद उसे निमरोद की सेनाओं पर विजय नहीं दिलायी ? क्या उसने मूसा को, जिसका

एकमात्र साथी उसकी छड़ी थी, फैरो और उसके दलों को पराजित करने में समर्थ नहीं किया ? क्या उसने, लोगों की दृष्टि में निर्धन और असहाय ईसा का यहूदियों की सम्मिलित सेनाओं पर प्रभुत्व स्थापित नहीं किया ? क्या उसने अरब की असभ्य और युद्धप्रिय जनजातियों को अपने पैगम्बर मुहम्मद के पवित्र और रूपान्तरकारी अनुशासन के प्रति नमित नहीं किया ? उसके नाम पर उठो, उसको अपनी आस्था अर्पित करो और अन्तिम विजय के लिये आश्वस्त रहो।[24]

अब्दुल बहा की रचनाओं तथा उक्तियों से

ये आत्माएँ स्वर्ग की सेनाएँ हैं और पूरब तथा पश्चिम की विजेता हैं। अगर उनमें से कोई एक किसी दिशा की ओर अभिमुख हो और लोगों को ईश्वर के राज्य की ओर आह्वान करे तो सभी श्रेष्ठ शक्तियाँ और ईश्वरीय आश्वासन उसके समर्थन और सहायता के लिए आ खड़ी होंगी। वह सारे द्वारों को खुलते हुए और सुदृढ़ किलों को धराशायी होते हुए देखेगा। अकेला ही वह संसार की सेनाओं पर आक्रमण करेगा, सभी देशों के सैन्य–समूहों को पराजित करेगा; सभी राष्ट्रों की सेनाओं की पंक्तियों को तितर–बितर करेगा तथा इस पृथ्वी की शक्तियों के केंद्र तक आक्रमण करेगा। यही अर्थ है ईश्वर के गणों का।[25]

☆☆☆

यदि आज के दिन कोई आत्मा ईश्वर के नियमों और परामर्शों के अनुसार कार्य करे तो वह मानवजाति की सेवा उसके चिकित्सक के रूप में करेगा और इज़राफिल* की

*(ऐसा माना जाता है कि स्वामी के आदेश पर इज़राफिल नामक देवदूत ने पुनर्जीवन के दिन तुरही बजा कर मृतकों को जीवित किया था।)

अचूक युक्ति की तरह वह इस पराधीन संसार के मृतकों को पुनर्जीवित करेगा; क्योंकि आभा साम्राज्य की प्राप्तियाँ कभी अवरूद्ध नहीं होतीं और ऐसी पुण्यात्माओं को सर्वोच्च वाहिनी की अमोघ सहायता मित्रवत उपलब्ध है। इस तरह एक लघु मच्छर एक सम्पूर्ण सबल गरूड़ बन जायेगा और एक दुर्बल गौरेया प्राचीन गौरव की ऊँचाइयों से युक्त शाही बाज में बदल जायेगा।[26]

☆☆☆

तुम यह निश्चयपूर्वक समझ लो कि तुम्हारे स्वामी स्वर्गलोक के सैन्य बल और आभा साम्राज्य के लोगों के साथ तुम्हारी सहायता के लिये आयेंगे। वे आक्रमण करेंगे तथा अज्ञानियों तथा पथभ्रष्टों पर प्रचंड प्रहार करेंगे।[27]

☆☆☆

अगर थोड़ी संख्या में ही लोग प्रेम और पूर्ण पावनता के साथ, संसार से मुक्त हृदय से ईश्वर के साम्राज्य की भावनाओं तथा दिव्य चुम्बकीय शक्तियों को अनुभव करते हुए तथा अपनी सहभागिता में एकात्म होकर एकत्रित होते हैं तो वह समूह सारी पृथ्वी को प्रभावित करेगा। उस मंडली के लोगों की प्रकृति, उनके द्वारा बोले जाने वाले शब्द, किये जाने वाले कर्म स्वर्ग के सुखों की ओर उन्मुख होंगे तथा शाश्वत परमानन्द का प्रथम स्पर्श करायेंगे। स्वर्गलोक के निवासी उनकी रक्षा करेंगे; परमधाम आभा साम्राज्य के देवदूत सतत् अनुक्रम से उनकी सहायता के लिए नीचे आएंगे।[28]

☆☆☆

वह तुम्हारी सहायता के लिये अदृश्य गणों के साथ आयेगा, और तुम्हें स्वर्ग की प्रेरणा–शक्ति से भर देगा; सर्वोच्च स्वर्ग की सुरभि प्रदान करेगा और स्वर्गलोक के उद्यान–पुष्पों को छू कर आने वाले पावन बयार से तुम्हारी सांसों को भर देगा। वह तुम्हारे हृदय में जीवन की चेतना जाग्रत करेगा और मोक्ष प्रदान करेगा तथा अपने चिन्हों से तुम्हारे मन–मानस को प्रकाशित करेगा। सत्य ही, यह परम् कृपा है। सत्य ही, यह वह विजय है जिसे कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता।[29]

☆☆☆

तुम आश्वस्त रहो कि यदि कोई आत्मा दृढ़ता से उठती है और प्रभु साम्राज्य का आह्वान करती है तथा कृतसंकल्प होकर विधानों की घोषणा करती है तो भले ही वह एक नगण्य चींटी हो, रणभूमि से विकट हाथी को भगा देने में समर्थ कर दी जायेगी और यदि वह एक अशक्त पतंगा भी हुई तो वह खूंखार गिद्ध के पंखों को टुकड़े–टुकड़े कर देगी।[30]

☆☆☆

जो सदैव क्षमाशील है उसकी कृपा ने प्रत्येक जलवायु वाले प्रदेश को प्रकाश से देदीप्यमान कर दिया है, स्वर्गलोक का सैन्यबल प्रभु के मित्रों के पक्ष में युद्ध करने और उन्हें विजय दिलाने के लिये दौड़ा चला आ रहा हैं।[31]

☆☆☆

अपने आभा साम्राज्य की सेनाओं को क्रियाशील करने तथा उगते हुए तारों की तरह विश्वसनीय अविच्छिन सहायता हमें भेजने के लिए हम उस सौंदर्यधाम का गुणगान करते हैं और कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं।[32]

☆☆☆

जब कभी भी पवित्र आत्माएँ, स्वर्ग की शक्तियों से अपने को युक्त करके आत्मा के ऐसे गुणों सहित उठेंगी और एक साथ प्रयाण करेंगी तो इनमें से प्रत्येक आत्मा एक सहस्त्र आत्माओं के समान होगी और इस प्रबल महासागर की हिलोरें लेती लहरें स्वर्ग के सैन्य बल की तरह होंगी।[33]

☆☆☆

आज यह स्पष्ट है कि जो कोई भी दिव्य संदेश देता है उसे अदृश्य साम्राज्य से आशीष प्राप्त होते हैं। अगर शिक्षण का कार्य नहीं किया जाता है तो आशीष भी प्राप्त नहीं होता, क्योंकि ईश्वर के प्रियजनों के लिये यह असम्भव है कि संदेश दिये बगैर वे सहायता प्राप्त करें।[34]

☆☆☆

ओ पवित्र देहरी के सेवक ! स्वर्गलोक के विजयी गण ब्यूहबद्ध होकर उस अश्वारोही की सहायता और विजय के लिये तत्पर तथा प्रतीक्षारत हैं, जो विश्वास के साथ सेवा के प्रांगण में अपने घोड़े को एड़ लगाकर लाता है, उस निर्भीक योद्धा का भला होता है, जो ईश्वर के सच्चे ज्ञान के प्रभाव

से उत्पन्न शक्ति के साथ तेजी से मैदान में आता है तथा अज्ञान और भ्रांतियों के समूहों को तितर–बितर कर देता है, जो दिव्य मार्गदर्शन के ध्वज को फहराये रहता है और विजय–तुरही को ध्वनित करता है, स्वामी के न्याय की सौगंध ! उसी ने गौरवपूर्ण सफलता एवं सच्ची विजय प्राप्त की है।[35]

☆☆☆

अपनी संख्या की लघुता से दुःखी मत हो और ईश्वर को अपने मनोभावों की शक्ति के लिये धन्यवाद दो। वह तुम्हारी सहायता ऐसी दृढ़ता से करेगा, जिससे मन चकित हो जाए और आत्माएँ विस्मित।[36]

☆☆☆

तुम इस महानतम आश्वासन से आश्वस्त हो जाओ कि सत्य ही ईश्वर अपनी कृपा तथा अनुग्रह द्वारा, जिनकी कांति पृथ्वी के पूर्व तथा पश्चिम तक चमकी, उनकी सहायता करेगा जो प्रत्येक विषय में उसके प्रमाण में दृढ़ हैं। वह सृष्टि में उन्हें तथा सभी क्षितिजों से तारों की भाँति दीप्तिवान और झिलमिल करते मार्गदर्शन के संकेत बनायेगा।[37]

☆☆☆

अपनी क्षमता के साथ ईश्वर की संविदा में सहयोग देने तथा उसकी मनोरम–वाटिका में सेवा करने के लिये तैयार हो जाओ। विश्वास रखो कि तुम्हें ईश्वर की कृपा प्रदान की

जाएगी और उसकी ओर से तुम्हें सफलता दी जाएगी। सत्य ही; वह अपनी पवित्रता के देवदूतों द्वारा तुम्हें सहायता देगा और 'आत्मा' की प्राणवायु द्वारा तुम्हें शक्ति प्रदान करेगा कि तुम सुरक्षा की नाव पर चढ़ सको, जीवन का ओज दे सको; उसके आदेशों और विधानों का सार घोषित कर सको; तथा उन भेड़ों का मार्गदर्शन कर सको जो बाड़े से सभी दिशाओं में भटक रहे हैं तथा उन्हें आशीष दे सको। अपनी क्षमता के अनुसार प्रयत्न तुम्हें करना है तथा गम्भीरतापूर्वक और बुद्धिमता से इस नवीन शताब्दी में प्रयास करना है। ईश्वर साक्षी है, सत्य ही गणों का स्वामी तुम्हारा सम्बल है; स्वर्ग के देवदूत तुम्हारे सहायक है; पवित्र आत्मा तुम्हारा साथी और समस्त संविदाओं का स्वामी तुम्हारा सहायक है। अकर्मण्य न हो बल्कि सक्रिय हो तथा निर्भय बनो।[38]

☆☆☆

स्वर्गिक साम्राज्य के स्वामी की सौगंध ! अगर कोई व्यक्ति ईश्वर के प्रेम से ओत–प्रोत हो निर्मल हृदय से भौतिक आसक्तियों से मुक्त होकर भगवद्वाणी के प्रसार के लिये उठ खड़ा होता है तो स्वर्ग के साम्राज्य का स्वामी उसकी सहायता ऐसी शक्ति के साथ करेगा जो प्राणियों के मर्म को भी बेध डालेगी।[39]

☆☆☆

तुम्हारे स्वामी ने अपने दृढ़ और अटल सेवकों को उन्हें सर्वदा विजयी बनाने, उनके शब्द को उदात्त करने, उनकी

शक्ति को प्रचारित, उनके प्रकाशों के प्रसार, उनके हृदयों को सबल करने, उनके ध्वज को ऊँचा करने, उनके समूहों को सहयोग देने, उनके सितारों को कान्तिमान करने, उन पर करूणा की अधिक वर्षा करने की तथा वीर सिहों को विजय प्राप्त करने में सक्षम करने का वचन दिया है।

शीघ्र करो, शीघ्रता करो, ओ तुम सुदृढ़ आस्थावानों ! शीघ्र करो, शीघ्रता करो, ओ तुम अटल ! त्याग दो असावधानों को, प्रत्येक अज्ञानी को एक तरफ कर दो, मजबूत रस्सी को पकड़ लो, महान धर्म में सुदृढ हो, व्यक्त दिव्य प्रकाश से प्रकाश लो, इस प्रज्ञ धर्म में धैर्यवान तथा स्थिर हो। तुम प्रेरणा के गणों को सर्वोपरि संसार से अनुक्रमानुसार अवतरित होते हुए, आकर्षण के प्रसार को अनवरत फैलते, अल्हा–हो–आभा की बहुलता को निरंतर बाहर प्रवाहित होते तथा ईश्वर की शिक्षाओं को अधिकतम शक्ति प्राप्त करते हुए देखोगे, जबकि असावधान जन सममुच स्पष्ट हानि के शिकार बनेंगे।[40]

☆☆☆

आज कोई भी व्यक्ति जो सत्य के प्रसार हेतु बोलता है और ईश्वर की सुरभियों के प्रसार में संलग्न है, वह निःसन्देह सहायता प्राप्त करेगा, 'पवित्र आत्मा' द्वारा सम्पुष्टि प्राप्त करेगा और संसार के लोगों के आक्रमणों का प्रतिरोध कर सकेगा, क्योंकि 'महाबल' के परिमण्डल की शक्ति अवश्य फैलेगी। इसलिये तुम देखते हो कि यद्यपि ईसा के शिष्य शारीरिक रूप से दुर्बल थे और हर राजा के उत्पीड़न से

पराजित प्रतीत होते थे, फिर भी अन्ततः उन्होंने सब पर विजय पायी और सबको अपने संरक्षण में लाया।[41]

☆☆☆

अगर आज के दिन कोई अपना हृदय प्रभु के राज्य से जोड़े, स्वयं को ईश्वर के अतिरिक्त सभी दूसरों से मुक्त कर ले और पवित्रता की सुरभि से आर्कषित हो जाए, तो आभा साम्राज्य की सेना, उसकी सहायता करेगी और सर्वोपरि संगम के देवदूत उसको सहयोग देंगे।[42]

☆☆☆

अपनी दुर्बलताओं का स्मरण मत करो, ईश्वर की सहायता तुम्हारे पास आएगी। स्वयं को भूल जाओ। ईश्वर की सहायता निश्चय ही आएगी।

ईश्वर की करूणा तुम्हें बल देने के लिये प्रतीक्षा करती है; जब तुम उसे पुकारोगे तो वह तुम्हें दस गुना अधिक बल देगी।

मुझे देखो : मैं कितना दुर्बल हूँ, फिर भी मुझे तुम्हारे बीच आने की शक्ति मिली : ईश्वर का एक दीन सेवक जिसे समर्थ किया गया है तुम्हें संदेश देने के लिये। मैं तुम्हारे साथ बहुत समय तक नहीं रहूंगा। किसी को अपनी दुर्बलता का विचार नहीं करना चाहिए, यह तो पवित्र आत्मा की शक्ति है जो उपदेश देने की क्षमता देती है। अपनी दुर्बलता का विचार केवल घोर निराशा ला सकती है। हमारे लिए आवश्यक

है कि हम सांसारिक विचारों से ऊपर देखें, हर भौतिक भाव से अपने को अलग कर लें, आत्मिक पदार्थों की इच्छा करें, उस सर्वशक्तिमान की चिरस्थायी विपुल करूणा पर अपनी दृष्टि स्थिर करें, जो हमारी आत्माओं को 'एक दूसरे से प्यार करो' के आदेश की आनन्ददायी सेवा के आह्लाद से भर देता है।[43]

☆☆☆

कितना महान, कितना अधिक महान है यह धर्म; कितना अधिक प्रचण्ड है इस पृथ्वी के लोगों और उनके सजातियों का प्रहार। निकट भविष्य में ही जनसाधारण का कोलाहल समूचे अफ्रीका, अमेरिका में सुनाई देगा, यूरोप वासियों और तुर्की की चीख, भारत और चीन की कराहें दूर और नजदीक से सुनाई पड़ेगी। सभी अपनी समूची शक्ति से उसके धर्म का प्रतिरोध करने के लिये उठ खड़े होंगे। तब प्रभु के सूरमा ऊपर से आने वाले अनुग्रह से युक्त होकर, विश्वास द्वारा बल पाकर विवेक की शक्ति से सहायता प्राप्त कर और विधानों की सेनाओं से प्रबल होकर उठ खड़े होंगे और इस पद के सत्य को व्यक्त करेंगे। पराजित कुलों पर गिरने वाली व्याकुलता की भ्रांति को देखो।[44]

☆☆☆

बाब ने कहा है : "अगर आज के दिन एक छोटी सी चींटी कुरान के सब से अधिक दुरूह और विस्मित करने वाले अवतरणों को समझने की शक्ति प्राप्त करने की इच्छा

करे तो उसकी इच्छा निःसंदेह पूरी होगी क्योंकि शाश्वत शक्ति का रहस्य सभी रचित जीवों के अन्तःस्थल में स्पंदित रहता है।" यदि एक ऐसे निःसहाय जीव को ऐसी सूक्ष्म क्षमता से सम्पन्न किया जा सकता है तो कितनी अधिक प्रभावकारी शक्ति बहाउल्लाह के अनुग्रह के उदार विस्तार के द्वारा प्रस्फुटित की जा सकती है।[45]

☆☆☆

ईश्वर का साम्राज्य असीम सामर्थ्य से सम्पन्न है। जीवन की सेना के लिए निर्भीक होना आवश्यक है, अगर 'राज्य' का समर्थन करने वाली सहायता उसे बार–बार कृपापूर्वक मिलती रहे।.....रणभूमि विशाल है, घोड़े को एड़ लगा कर अंदर आने का समय आ गया है । यही समय है अपने बल के सामर्थ्य को, अपने हृदय की निर्भीकता को तथा अपनी आत्मा के पराक्रम को प्रकट करने का।[46]

☆☆☆

और अब यदि तुम बहाउल्लाह के उपदेशों के अनुसार कार्य करते हो तो तुम निश्चिंत रहो कि तुम्हे सहायता तथा प्रभुकृपा मिलेगी। सभी कार्यों में, जिसका तुम उत्तरदायित्व लेते हो, तुम विजयी होगें और पृथ्वी के सारे निवासी भी तुम्हारा सामना नहीं कर सकेंगे। तुम विजेता हो क्योंकि 'पवित्र आत्मा' तुम्हारी सहायक है। भौतिक शक्तियाँ, असाधारण शक्तियों के ऊपर हैं, और आगे बढ़कर 'पवित्र आत्मा' स्वयं तुम्हारी सहायता करेगी।[47]

☆☆☆

पराक्रमी और निर्भीक बनो। हर दिन अपनी आध्यात्मिक विजय को बढ़ाओ। शत्रुओं के सतत् आघातों से व्याकुल न हो। उन पर दहाड़ते शेरों की भाँति हमला करो। अपनी चिन्ता मत करो, क्योंकि प्रभु–साम्राज्य की अदृश्य सेनाएँ तुम्हारी ओर से लड़ रही हैं। युद्धभूमि में 'पवित्र आत्मा' के आशीर्वाद के साथ प्रवेश करो। तुम्हें इस अवश्यम्भाविता का ज्ञान हो कि आभा–साम्राज्य की शक्तियाँ तुम्हारे साथ हैं। तुम्हारे तप्त मस्तकों पर 'परमधाम अब्हा' का शीतल स्वर्गिक समीर स्पर्श कर रहा है। एक क्षण के लिये भी तुम अकेले नहीं हो। क्षण भर के लिए भी तुम्हें तुम्हारे ऊपर नहीं छोड़ा गया है। महिमामय ईश्वर तुम्हारे साथ है। सम्राटों का सम्राट तुम्हारे साथ है।[48]

शोगी एफेन्दी के पत्रों तथा तारों से

यद्यपि हमारा कार्य कठिन और संकटपूर्ण है तथापि बहाउल्लाह की सम्पोषक शक्ति का स्मरण करो। इस स्मरण से उत्पन्न शक्ति और उनका दिव्य मार्गदर्शन ही हमारी सहायता करेंगे, यदि हम उनके पथ का दृढ़तापूर्वक अनुसरण करें तथा उनके विधानों की अखंडता को अक्षुण्ण रखने का प्रयास करते रहें। उनके उद्धार करने वाले अनुग्रह के प्रकाश पर अपना विश्वास यदि हम दृढ़ रखे तो हमारे मार्ग को वह प्रकाशित करेगा जब हम इस अशांत युग की आपत्तियों और लाभों के बीच से अपना मार्ग बनायेंगे तथा अपने कर्त्तव्यों को इस प्रकार निभाने के योग्य बनेंगे कि वह उसकी महिमा और धन्य नाम के सम्मान को बढ़ाने में योगदान दें।[49]

☆☆☆

अब्दुल बहा ने प्रमाणित किया है, "चर्च के इतिहास के अनुसार सप्ताह के दिनों की गणना करने में भी पीटर असमर्थ थे। जब कभी वह मछली मारने के लिये जाने का निश्चय करते थे, वे अपने सप्ताह भर के भोजन को सात पोटलियों में बाँधते और प्रतिदिन उन में से एक खाते और सातवें दिन पहुँचते तो वह जान जाते कि विश्राम दिवस आ

गया और तब वह उसका पालन करते।" अगर 'मानव–पुत्र' ऐसे जड़भरत में ऐसी अन्तः शक्ति भरने में समर्थ था जो बहाउल्लाह के शब्दों में प्रज्ञा तथा उक्तियों के रहस्यों को उसके मुख से प्रवाहित करने का कारण बना और उसे अपने शेष शिष्यों से ऊँचा उठाया, उसे इस योग्य बनाया कि वह उसका उत्तराधिकारी तथा उसके चर्च का संस्थापक बन सके। तो पिता, जो बहाउल्लाह है, कितना अधिक समर्थ कर सकता है अपने अनुयायियों में सबसे अधिक लघु और नगण्य को अपने उद्देश्य को निष्पन्न करने के लिये ऐसे आश्चर्यों को सम्पादित करने में, जो ईसा मसीह के प्रथम प्रधान–शिष्य की महानतम उपलब्धियों को बौना कर दें।[50]

☆☆☆

कार्य क्षेत्र सचमुच इतना विशाल है, समय इतना कठिन, धर्म इतना अधिक महान, कार्यकर्ता इतने थोड़े, समय इतना कम है, सौभाग्य इतना अमूल्य है कि बहाउल्लाह का नाम वहन करने वाला उनके धर्म का कोई भी अनुयायी एक क्षण के लिये भी नहीं हिचक सकता। ईश्वर से उत्पन्न वह शक्ति अपने व्यापक सामर्थ्य में अप्रतिरोध्य, अपनी अन्तःशक्ति में गणनातीत, जिसकी प्रगति रुक नहीं सकती, अपने प्रचालनों में रहस्यमय तथा अपनी अभिव्यक्तियों में श्रद्धामय विस्मय भरने वाली एक शक्ति, जैसा कि बाब ने कहा है, जो "प्रत्येक संसार के प्राणी के अन्तस्थल में स्पन्दित होती है" और जो बहाउल्लाह के अनुसार "अपने गुंजित प्रभाव से संसार के

संतुलन को बिगाड़ देती है तथा व्यवस्थित जीवन में एक क्रांति ला देती है" – एक ऐसी शक्ति, एक दोहरी तलवार की तरह काम करती हुई हमारी अपनी ही आँखों के नीचे एक ओर उन प्राचीन सम्बन्धों को विच्छेदित कर रही है और दूसरी ओर उन बन्धनों को शिथिल कर रही है जो शैशव अवस्था से और पूरी तरह से विमुक्त न हुए बहाउल्लाह के धर्म को बद्ध किये हुए हैं।[51]

☆☆☆

यह समय खोने का नहीं है। दुविधा का कोई अवसर शेष नहीं है। जनसाधारण जीवन की रोटी के लिये भूख से व्याकुल है। दृढ़ और अपरिवर्तनीय वचन दिया जा चुका है। ईश्वर की अपनी योजना प्रारम्भ कर दी गई है। हर बीतते दिन के साथ इसका वेग बढ़ रहा है। स्वर्ग और पृथ्वी की शक्तियाँ रहस्यमय ढ़ंग से इसके कार्यान्वयन में सहायता करती है। ऐसा अवसर अद्वितीय है। संशयी को स्वयं उठ कर ऐसे अटल कथनों का सत्यासत्य परखने दो। प्रयत्न और अध्यवसाय करना अन्तिम और सम्पूर्ण विजय को सुनिश्चित करना है।[52]

☆☆☆

एक ऐसी चुनौती के समक्ष एक समुदाय, जिसने स्थायी उपलब्धियों की ऐसी चोटियों पर विजय प्राप्त की है, न तो विचलित हो सकता है न पीछे हट सकता है। अपनी नियति

के प्रति विश्वस्त, ईश्वर प्रदत्त शक्ति पर आश्रित, अपनी गत विजयों की चेतना से आश्वस्त, विघटित होती हुई सभ्यताओं के दृश्य से कार्य प्रेरित यह (मुझे कोई संदेह नहीं) अपने उत्तरदायित्व की आवश्यकताओं की निर्भीकता से पूर्ति करेगा, आश्वस्त होकर कि इसकी हर कार्यवाही को पार किये हुए प्रत्येक चरण के साथ, दिव्य प्रकाश और शक्ति का अभिनव प्रकटीकरण इसका संचालन करेगा तथा इसे आगे की ओर उस समय तक प्रेरित करेगा जब तक पूरे समय तथा शक्ति के साथ यह उस योजना का, जो इसकी प्रदीप्त नियति से पूरी तरह से संलग्न है, पूरा न कर ले।[53]

☆☆☆

क्षेत्र अपनी सम्पूर्ण विशालता और उर्वरता में प्रशस्त खुला एवं निकट है। फसल पक चुकी है। समय कब का आ चुका है। संकेत दिया जा चुका है। आध्यात्मिक शक्तियाँ, जो रहस्यमय ढंग से मुक्त की गई हैं पहले से वर्तमान संवेग से निर्विरोध, अबाधित सक्रिय हैं। जो कोई भी उठेगा और इस परमावश्यक और अनिवार्य पुकार का उत्तर देगा उसके लिये शीघ्र और सुस्पष्ट विजय निश्चित है।[54]

☆☆☆

क्षेत्र विशाल है, तुम्हारी संख्या अल्प है, जन समूह उदासीन है ऐसा सोचकर न तुम निरूत्साहित हो और न ही भयभीत। तुम्हें सदैव अपनी दृष्टि बहाउल्लाह के वचन पर

स्थित रखनी चाहिए, उनके रचनात्मक 'शब्दों' में अपनी पूरी आस्था रखनी चाहिये, उनकी सार्वभौम और अप्रतिरोध्य सामर्थ्य के पिछले विविध प्रमाणों को याद करो तथा सबका कल्याण करने वाले उसके अनुग्रह और आशीषों के योग्य एवं आदर्श बनने के लिए उठो।[55]

☆☆☆

अगर सभी मित्र व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से अपनी भूमिका निभाते हैं और सम्पूर्ण उद्योग करते हैं तो बहाउल्लाह का प्रचुर आशीष उन्हें कृपापूर्वक पूर्णतया मिलेगा तथा योजना की विजय 'धर्म' के इतिहास के एक गौरवशाली अध्याय का निर्माण करेगी।[56]

☆☆☆

वो अति गूढ़ शक्तियाँ ही, जिन्होने इस अपरिमेय क्षमता युक्त दैवी योजना को बनाया है, इसके कार्यान्वयन का मार्गदर्शन कर रही है, एवं इसके दूसरे चरण को पूरा करने की प्रक्रियाओं को बल दे रही है। संगठित समाज के चेतनापूर्ण उर्ध्वगमन के धर्म कार्य के लिये इन शक्तियों का शीघ्र और पूर्ण प्रयोग अत्यंत आवश्यक है।

इस योजना को पूरा करने के लिए उत्तरदायी सभी प्रकार के स्थानीय प्रादेशिक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से अपने–अपने क्षेत्र में पूरी तरह फैल जाने का अनुरोध है। फलस्वरूप मिलनेवाली सफलता निर्धारित समय में ही सम्पूर्ण

निर्णयात्मक विजय प्राप्त कर लेने की आशाओं को अतुलनीय दृढ़ता प्रदान करेगी।[57]

☆☆☆

'प्रभुराज्य' के अदृश्य गणसमूह तत्पर और उत्सुक है। उनकी सहायता को वेगपूर्वक बढ़ने को, जिनमें विचार वस्तुओं की समीक्षा का तथा उनके अनुरूप निणर्य लेने का साहस है।[58]

☆☆☆

समय बहुत कम है, अवसर हालाँकि घड़ी की घूमती सुइयों के साथ दुगने चौगुने हो रहे हैं, लेकिन फिर आने वाले नहीं हैं, कुछ दूसरी शताब्दी तक नहीं आयेंगे और कुछ कभी नहीं आयेंगे। चुनौती कितनी गम्भीर क्यों न हो, कार्य कितने जटिल क्यों न हों, समय कितना कम क्यों न हो, संसार की परिस्थिति जितनी भी धुँधली हो, कठिनाइयों में ग्रस्त नवोदित समुदाय के साधन कितने ही सीमित क्यों न हो, दिव्य शक्ति के स्त्रोत अभी तक प्रयोग में नहीं लाये गए हैं। जिनसे वह शक्ति ग्रहण कर सकता है। ये स्त्रोत अपनी सम्भावनाओं से पूर्ण असंख्य हैं और यदि प्रतिदिन आवश्यक प्रयत्न करें तथा आवश्यक आत्माओं को स्वेच्छा से स्वीकारें तो वे बिना हिचकिचाए अपने शक्तिदायक प्रभाव से सराबोर कर देगें।[59]

☆☆☆

देवदूत के समूह की सेनाएं बहाउल्लाह के धर्म के योद्धाओं को उनकी चरम आवश्यकताओं की घड़ी में दृढ़रूप से पंक्तिबद्ध एकत्रित हैं।[60]

☆☆☆

गणाधिपति राजाधिराज प्रभु उसके धर्म के हेतु युद्धरत योद्धा को अचूक सहायता देने हेतु तत्पर हैं। क्रमबद्ध अदृश्य सेनाएं ऊपर से कुमुक का सम्बल प्रदान करने के लिये तत्पर है।[61]

☆☆☆

उसके प्रेम का कवच पहन कर उसकी समर्थ कृपा की ढाल कस कर दृढ़ता से अश्व पर सवार होकर, गणों के स्वामी के शब्द की बरछी उठा कर तथा उसके वचन पर अशंकनीय निर्भरता के सर्वोत्तम संसार से युक्त उन्हें उन क्षेत्रों की ओर अभिमुख होने दो जो अभी प्रभु के प्रकाश से वंचित है। तथा अपने चरण उन लक्ष्यों की ओर बढ़ने दो जो अभी तक नहीं पाये गये हैं; आश्वस्त होकर कि 'वह' जिसने उन्हें ऐसी विजय उपलब्ध करायी हैं, अपने 'राज्य' में ऐसे पुरस्कार संचित कराए हैं, उन्हें अपने जन्मसिद्ध आध्यात्मिक अधिकार उस कोटि तक बढ़ाने में सतत् सहायता करता रहेगा कि कोई भी सीमाओं से घिरा मन न उसकी कल्पना कर सकता है और न मानव हृदय उसका अनुभव कर सकता है।[62]

☆☆☆

यह नियत कार्य कितना भी संकटपूर्ण और कठिन क्यों न हो, उसके लिए प्रयास चाहे कितना ही लम्बा क्यों न हो, धर्म की विजय के लिए भौतिकता, राष्ट्रीयता, धर्मनिरपेक्षता, जातिवाद, कर्मकाण्ड की बढ़ती शक्तियों से जूझने वाले के मार्ग में चाहे कितने ही खतरे और गड्ढ़े हों, बहाउल्लाह के ज्ञान में जिसका वचन दिया गया है वह प्रभु कृपा निःसन्देह रहस्यमय और आश्चर्यजनक ढंग से उसके निर्मित कार्य के लिए संघर्ष करने वालों से सम्पूर्ण सर्वांग विजय प्राप्त करने में सहायता करेगी।[63]

☆☆☆

इन महान उद्देश्य को पाने के लिये जो कोई भी एकाग्रचित्त हो, साहस और समर्पण के साथ इन महान उद्देश्यों को पाने के लिये दृढ़ संकल्प करता है, उसे निरन्तर मिलने वाला आशीष इतना शक्तिशाली होता है कि धरती की कोई भी ताकत इतने महान कर्त्तव्य को पूरा करने में बाधक नहीं बन सकती, यहाँ तक कि इसे फलीभूत करने में विलम्ब भी नही कर सकती।[64]

☆☆☆

देवदूत के समूह अपनी सहायता कृपापूर्वक देने एवं उनके साहसमय और संयुक्त प्रयासों को अपने आशीष देने हेतु तत्पर हो उनका अवलोकन करते हैं। दिव्य योजना का रचयिता, जैसा कि उसने अपने उपदेशों में वचन दिया है, मार्ग में आने वाली बाधाओं पर विजय प्राप्त करने में सहायता

देगा तथा उनके ऐतिहासिक उद्यम को बहुचर्चित विजय से मंडित करेगा। उनके धर्म का संस्थापक स्वयं उन्हें अपने 'राज्य' में अपनी प्रज्ञा तथा दानशीलता के अनुकूल अपने विश्व–व्यापक (धर्म) संघ के हितों की प्रगति में उनके योगदान के लिये पुरस्कृत तथा 'आभा–साम्राज्य' में निवास करने वाले अमर संतों और वीरों की मण्डली के मध्य ऊँचाइयों तक ले जाने में चूकेगा नहीं।[65]

☆☆☆

शोगी एफेन्दी की ओर से लिखे पत्रों से

शिक्षण के क्षेत्र में आपके द्वारा बहुत कुछ नहीं कर पाने का कारण कदाचित आपकी अपनी कमजोरियों एवं संदेश के प्रसार में अपनी असमर्थताओं पर अत्यधिक सोचते रहना है। बहाउल्लाह और मास्टर दोनों ने हमें बार–बार अपनी न्यूनताओं की चिन्ता छोड़कर पूर्णतया ईश्वर पर अवलम्बित रहने का आग्रह किया है। अगर हम केवल तैयार हो जायें तथा ईश्वर के अनुग्रह के सक्रिय संवाहक बन जाएं तो वह हमारी सहायता करेगा। क्या आप सोचते हैं कि ये शिक्षक हैं जो धर्मान्तरण कराते हैं और मानव हृदय का परिवर्तन करते हैं? नहीं, निश्चय ही नहीं। वे केवल विशुद्ध आत्माएँ हैं जो पहला चरण उठाते हैं, इसके पश्चात बहाउल्लाह उन्हें प्रेरित करते हैं तथा उनका प्रयोग करते हैं। अगर उनमें से कोई एक क्षण के लिये भी यह सोचे कि उनकी उपलब्धियों के कारण उसकी अपनी क्षमताएँ हैं तो उसका कार्य समाप्त हो जाता है और उसका पतन आरम्भ हो जाता है। यह यथार्थ कारण है कि कितनी ही आत्माएँ अद्‌भुत सेवाओं के पश्चात अचानक ही अपने को नितान्त अशक्त पाती है और कदाचित धर्म की आत्मा द्वारा अनुपयोगी आत्माओं की तरह एक और फेंक दी

जाती है। किस सीमा तक हम ईश्वर की इच्छा को अपने माध्यम से क्रियाशील होने देने के लिए तत्पर हैं, इसका मापदंड है।

अतः, अपनी चेतना में दुर्बलताओं को मत पनपने दें, ईश्वर पर सम्पूर्ण भरोसा रखें, अपने हृदय को उसके उद्देश्य की सेवा करने की भावना से परिपूर्ण रखें और उसकी पुकार की उद्घोषणा करें और आप देखेंगे कि किस तरह मधुरवाणी से मानव–हृदयों को परिवर्तित करने की शक्ति स्वभावतः आयेगी।

अगर आप उद्यत होकर शिक्षण कार्य करना प्रारम्भ करते हैं तो शोग़ी एफेन्दी अवश्य ही आपके लिए प्रार्थना करेंगे। केवल उद्यत होने से ही आपको ईश्वर की सहायता और आशीष मिल पायेंगे।[66]

☆☆☆

आपको अपनी सीमाओं के बारे में कभी नहीं सोचना चाहिए और संदेश देने में उन्हें आपको बाधा पहुँचाने देना चाहिए, क्योंकि आस्तिकजन, समर्थ या असमर्थ, सम्पन्न या विपन्न, प्रभावशाली अथवा अज्ञात, अन्ततः मात्र वाहक हैं जिनके द्वारा ईश्वर मानव जाति तक अपना संदेश पहुँचाता है। वे साधन हैं, जिनमें ईश्वर अपना संकल्प अपने लोगों तक संचारित करता है। अतः, मित्रगण अपने अभावों का अवलोकन इस प्रकार करना बन्द कर दें कि जो उनमें नेतृत्व और सेवा के मनोभाव को कम करे। बहाउल्लाह से

मिली दिव्य सहायता के संदेश में उन्हें विश्वास रखना चाहिए और एक ऐसे आश्वासन से पुष्ट और प्राणवान होकर अपने जीवन के अन्त तक कठिन परिश्रम करते रहना उचित है।[67]

☆☆☆

परमात्मा के साम्राज्य के अनेक देवदूत आपकी हर प्रकार की सहायता करने को तैयार हैं। आप उनके द्वारा निश्चित रूप से अपनी तमाम रूकावटों को हटाने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे और अपने हृदय की सभी इच्छाओं को पूर्ण कर सकेंगे। बहाउल्लाह ने हमें वचन दिया है कि हम अपने प्रयत्नों से दृढ़ हो जायें और अपना पूर्ण विश्वास उसमें व्यक्त करें तो हमारे सम्मुख सफलता के द्वार पूर्ण रूप से खुल जायेंगे।[68]

☆☆☆

अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये जितना अधिक कठोर प्रयत्न आप करेंगे उतने ही महानतर होंगे बहाउल्लाह के अनुमोदन और उतना ही आपको सफलता प्राप्ति के सुनिश्चय का बोध होगा। अतः प्रसन्न रहें और पूरे विश्वास के साथ उद्योग करें। क्योंकि बहाउल्लाह ने अपनी दिव्य सहायता का वचन हर उस को दिया है जो विशुद्ध और अनासक्त हृदय से उनके पवित्र 'शब्द' को प्रसारित करता है, इसके बावजूद कि वह प्रत्येक मानवीय ज्ञान और क्षमता से हीन है और अंधकार तथा विरोध की सेनाएं उसके प्रतिकूल सज्जित हैं।

लक्ष्य स्पष्ट है, मार्ग निरापद और निश्चित। हमारे प्रयत्नों की अन्तिम सफलता में बहाउल्लाह के आश्वासन सुस्पष्ट हैं। हम अटल रहें तथा सम्पूर्ण हृदय से यह महान कार्य जो हमारे हाथों में उसने सौंपा है, करते रहें।[69]

☆☆☆

बहाई शिक्षक के लिये पूरी तरह आस्थावान होना आवश्यक है। इसी में उसका बल और उसकी सफलता का रहस्य है। अकेले और अपने चारों ओर के लोगों की गहरी उदासीनता के बावजूद आपको विश्वास होना चाहिए कि 'प्रभु साम्राज्य' के गण आपके पक्ष में हैं तथा उनकी सहायता के द्वारा आप अवश्य अंधकार की उन शक्तियों को पराजित कर पायेंगे जो ईश्वर के धर्म के विरूद्ध खड़ी हैं। अतः दृढ़ रहें, प्रसन्न रहें और विश्वासी बने।[70]

☆☆☆

वह आपको उस कार्य में परामर्श देगा जिसे करने की आपकी हार्दिक इच्छा है, आप दृढ़ता से लगे रहें कि अन्ततोगत्वा दिव्य सहायता द्वारा आप अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। ईश्वर का अवलम्बन सचमुच सबसे अधिक सशक्त और निरापद शस्त्र है जिसे बहाई शिक्षक रख सकता है, क्योंकि उसके द्वारा कोई भी पार्थिव शक्ति अपराजित नहीं रह सकती है और न कोई दुष्कर बाधा।[71]

☆☆☆

संख्या की अल्पता, कुशल शिक्षकों का अभाव तथा साधनों की साधारणता से उन्हें न तो निरूत्साहित होना चाहिए और न ही रुकना चाहिये। उनके लिये परमावश्यक है धर्म के गौरवपूर्ण इतिहास को स्मरण करना, जिसका पूर्व और पश्चिम दोनों में समर्पित आत्माओं द्वारा संस्थापन हुआ था, जो अधिकतर न तो धनवान और न ही सुशिक्षित थे परन्तु उनकी भक्ति, उनके धर्मोत्साह और आत्म बलिदान ने प्रत्येक बाधा को पराभूत कर दिया और ईश्वरीय धर्म के लिये अद्‌भुत विजय प्राप्त की। युवक और वृद्ध, स्त्री और पुरूष सभी को अपने को समर्पित करने दो तथा नई जगहों में जाकर बसने, यात्रा करने और अनुभव के अभाव में भी शिक्षण करने दो तथा आश्वस्त रहो कि बहाउल्लाह ने उन सभी को सहायता का वचन दिया है जो उसके नाम पर उठ खड़े हुए हैं। उसका बल उनको शक्ति देगा, उनकी अपनी दुर्बलता महत्वहीन है।[72]

☆☆☆

बहाउल्लाह ने कहा है कि ईश्वर उन सभी की सहायता करेगा जो उसकी सेवा के लिये उठ खड़े होंगे। जितना अधिक आप श्रम करेंगे उतना ही अधिक वह आपकी सहायता करेगा और आपको आशीष प्रदान करेगा।[73]

☆☆☆

अगर मित्रगण हमेशा उस समय तक प्रतीक्षा करते रहें जब तक वे किसी नियत कार्य करने के लिए पूरी तरह योग्य न हो जायें तो धर्म पर प्रायः विरामचिन्ह लग जायेगा ! सेवा

का प्रयत्न मात्र, कितना भी कोई तुच्छ अनुभव करे ईश्वर के आशीष को आकर्षित करता है और उस कार्य के लिये किसी को अधिक उपयुक्त बनाता है।[74]

☆☆☆

एक बार जब कुछ निडर, आत्मत्यागी व्यक्ति सेवा के लिये उद्यत हो जायेंगे फिर उनका उदाहरण निःसंदेह दूसरे कमजोर, व्यक्तियों को उनके पदचिन्हों का अनुसरण करने के लिये उत्साहित करेगा। हमारे धर्म का इतिहास सचमुच ही ऐसे साधारण नगण्य व्यक्तियों द्वारा विलक्षण कार्यों के निष्पादन के कीर्तिमानों से भरा है, जो ईश्वर में आस्था रखकर सामर्थ्य के वास्तविक प्रकाश के संकेत और स्तम्भ बन गये।[75]

☆☆☆

एक बार जब मित्रगण अपने उद्देश्य के निहित लक्ष्य विजित करने लगेंगे, वे देखेंगे कि उन्हें ईश्वरीय कृपा मिल रही है और उनका कार्य शीघ्र समाप्त होगा।[76]

☆☆☆

यह दिखलाता है कि जहाँ कहीं और जब कभी मित्र सेवा के लिये उद्यत होते हैं, इस दिव्य धर्म में निहित रहस्यात्मक शक्ति उन्हें आशीष देने तथा उनके परिश्रमों को उनकी उत्कृष्ट आशाओं से भी परे सम्बलित करने को प्रस्तुत होती है।[77]

☆☆☆

हम में से प्रत्येक यदि अपनी असफलताओं की समीक्षा करें तो अपात्र और निराशा अनुभव करेंगे तथा यह अनुभूति हमारे रचनात्मक प्रयासों को मात्र कुण्ठित करती रहेंगी और समय नष्ट करती रहेंगी। यही वह विषय है जिस पर हमें एकाग्र होना चाहिए। धर्म की महिमा और बहाउल्लाह की शक्ति है जो मात्र एक बूंद को हिलोरें लेते सागर में परिवर्तित कर सकती हैं।[78]

☆☆☆

जब हम उसमें अपनी आस्था रखते हैं, बहाउल्लाह हमारी समस्याओं का समाधान कर देते हैं और मार्ग प्रशस्त कर देते हैं।[79]

☆☆☆

मात्र एक प्रौढ़ आत्मा जो आध्यात्मिक बोध और धर्म के गम्भीर ज्ञान से युक्त हो एक पूरे देश को प्रज्ज्वलित कर सकती है, एक शुद्ध निःस्वार्थ वाहक द्वारा कार्य करने की धर्म की शक्ति, इतनी महान है।[80]

☆☆☆

सर्वदा धर्म की महानता पर दृष्टि रखना हमारे लिए परमावश्यक है और स्मरण रखना कि बहाउल्लाह उसकी सहायता करेंगे जो उनकी सेवार्थ उद्यत होगा। जब हम स्वयं देखते हैं तो हम अपने दोषों और नगण्यता से निश्चय ही निरूत्साहित होंगे।[81]

☆☆☆

अपूर्व है वह चुम्बक जो ऊपर से आशीषों को आकर्षित करता है, ईश्वर के धर्म का आज जो भी संदेश दे रहा है वह अपूर्व घटना है। स्वर्ग के गण स्वर्ग और पृथ्वी के मध्य मंडरा रहे हैं और धैर्यपूर्वक उस बहाई के आगे बढ़ने का ईश्वर के धर्म की विशुद्ध भक्ति और समपर्ण के साथ संदेश देने के लिये प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि वे उसको योगदान एवं सहायता देने के लिए आ सकें। धर्मसंरक्षक की प्रार्थना है कि मित्र अपने प्रयत्नों को तीन गुना और बढ़ायें क्योंकि समय अल्प है, खेद है कार्यकर्ता बहुत कम। वे जो अमरता प्राप्त करना चाहते हैं, आगे बढ़ें और ईश्वरीय पुकार की घोषणा को और तेज करें। उन आध्यात्मिक विजयों से जो वे प्राप्त करेंगे, स्वयं विस्मित हो जायेंगे।[82]

★★★

सर्वोच्च संगम के गण समूह युद्ध सज्जा में पृथ्वी और स्वर्ग के मध्य उनको योगदान देने के लिये दौड़ पड़ने को तत्पर हैं, जो धर्म के उपदेशों हेतु उठ खड़े होते हैं। अगर कोई 'पवित्र' आत्मा का अनुमोदन पाना चाहता है तो उसे प्रचुर सम्पन्नता शिक्षण के क्षेत्र में मिलती हैं। संसार पहले से विपरीत खोज रहा है और अगर मित्र नवीन निश्चय के साथ पूरी तरह अपने समक्ष भव्य कार्य के प्रति समर्पित, उद्यत होंगे, तो भगवान के महिमामय धर्म के लिए निरंतर विजय प्राप्त होगी।[83]

★★★

मित्रों को 'पवित्र आत्मा' की शक्ति को पूर्णतया समझना चाहिए जो व्यक्त है और इस समय बहाउल्लाह के आविर्भाव द्वारा उन्हें अनुप्राणित कर रहें है। यदि वे अपने को पूर्ण रूप से 'पवित्र आत्मा' के प्रभाव और निर्देशन के आधीन कर दें तो पृथ्वी और स्वर्ग में ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो उन्हें विचलित कर सके।[84]

☆☆☆

सन्दर्भ

1. *बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन*, 122
2. उपयुक्त, 124
3. उपयुक्त, 196
4. उपर्युक्त, 248–49
5. उपर्युक्त, 297
6. किताब–ए–अकदस के बाद प्रकटित *बहाउल्लाह की पाटी से*, 48
7. उपर्युक्त, 84–85
8. उपर्युक्त, 156
9. *द एडवेंट ऑफ़ डिवाइन जस्टिस्* से उद्धृत, 76
10. उपर्युक्त, 80
11. उपर्युक्त, 80–81
12. उपर्युक्त, 81
13. उपर्युक्त, 82
14. *बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था* में उद्धृत, 106
15. उपर्युक्त, 106
16. *बाब की रचनाओं से संकलन*, 123
17. उपर्युक्त, 153
18. उपर्युक्त, 164–66
19. उपर्युक्त, 171
20. उपर्युक्त, 176

21. उपर्युक्त, 177
22. उपर्युक्त, 192
23. उपर्युक्त, 211
24. जीविताक्षरों को सम्बोधित, *शहीदों की गाथा,* 94
25. *ईश्वरीय योजना की पातियाँ,* 47–48
26. *अब्दुल बहा की रचनाओं से संकलन,* 23
27. उपर्युक्त, 43
28. उपर्युक्त, 81
29. उपर्युक्त, 186–87
30. उपर्युक्त, 209
31. उपर्युक्त, 229
32. उपर्युक्त, 237
33. उपर्युक्त, 260
34. उपर्युक्त, 264–65
35. उपर्युक्त, 264
36. *अब्दुल बहा की पातियाँ,* 80
37. उपर्युक्त, 83
38. उपर्युक्त, 362
39. उपर्युक्त, 348
40. उपर्युक्त, 442–443
41. उपर्युक्त, 508
42. उपर्युक्त, 591
43. अब्दुल बहा, *अमृतवाणी,* 38–39

44. *बहाई प्रशासन* से उद्धृत, 123

45. *द एडवेंट ऑफ डिवाइन जस्टिस्* से उद्धृत, 46

46. सयुंक्त राज्य और कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को दिनाँक 28 जनवरी 1939 को लिखे गये एक पत्र से उद्धृत : *अमेरिका को संदेश,* 17

47. *स्टार ऑफ द वेस्ट* से उद्धृत, खंड 8, 103

48. उपर्युक्त, खंड 13, 113

48. संयुक्त राज्य और कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के बहाइयों को दिनाँक 21 मार्च 1932 को लिखे एक पत्र से उद्धृत *बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था,* 67

50. *द एडवेंट ऑफ डिवाइन जस्टिस्* से उद्धृत, 46

51. उपर्युक्त, 46–47

52. संयुक्त राज्य और कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के बहाइयों को दिनाँक 28 जनवरी 1939 को लिखे एक पत्र से, *अमेरिका को संदेश,* 17

53. संयुक्त राज्य और कनाडा की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के बहाइयों को दिनाँक 4 जुलाई 1939 को लिखे एक पत्र से, *अमेरिका को संदेश,* 26

54. उपर्युक्त दिनाँक 28 जुलाई 1939 को, 28, 29

55. भारतीय बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को दिनाँक 29 जून 1981 को लिखे गये एक पत्र से *'एक दिवस की ऊषा'*, 90

56. ब्रिटिश द्वीपों के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को दिनाँक 18 दिसम्बर 1945 को लिखे गये एक पत्र से

57. संयुक्त राज्य और कनाडा के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को दिनाँक 6 अक्टूबर 1946 को प्रेषित एक समुद्री तार से, *'अमेरिका को संदेश'* से उद्धृत, 108
58. ब्रिटिश द्वीपों के बहाइयों को राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को दिनाँक 6 सितम्बर 1949 को लिखे गये एक पत्र से
59. अमेरिका के बहाई समुदाय को 18 दिसम्बर 1945 को लिखे गये एक पत्र से उद्धृत, 85
60. उपर्युक्त, 23 नवम्बर 1951, 105
61. अक्टूबर 8, 1952 के एक समुद्री तार से, *बहाई संसार को संदेश,* 44
62. अप्रैल 1956 के एक पत्र से, *बहाई संसार को संदेश,* 102
63. दिनाँक 19 जुलाई 1956 को अमेरिका के बहाई समुदाय को लिखे एक पत्र से, *'धर्म का दुर्ग'*, 149
64. न्यूजीलैंड के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को दिनाँक 27 जून 1957 को लिखे एक पत्र से
65. आइबेरियन प्रायद्वीप के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को दिनाँक 2 जुलाई 1957 को लिखे एक पत्र से
66. एक बहाई को दिनाँक 31 मार्च 1932 को लिखे एक पत्र से
67. उपर्युक्त, दिनाँक 18 मार्च 1934
68. उपर्युक्त, दिनाँक 22 सितम्बर 1936

70. उपर्युक्त, दिनाँक 30 जून 1937
71. उपर्युक्त, दिनाँक 27 मार्च 1938
72. भारतीय बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 29 जून 1941 को लिखे एक पत्र से', *'नव दिवस की ऊषा'*, 89
73. क्विटो, युकैडोर के बहाइयों को लिखे दिनाँक 23 नवम्बर 1941 के एक पत्र से
74. एक बहाई को दिनाँक 4 मई 1942 को लिखे एक पत्र से
75. ब्रिटिश द्वीपों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 27 मार्च 1945 को लिखे एक पत्र से
76. उपर्युक्त, 9 अगस्त 1945
77. एक बहाई को दिनाँक 18 फरवरी 1947 को लिखे एक पत्र से
78. उपर्युक्त, दिनाँक 13 अक्टूबर 1947 को
79. उपर्युक्त, दिनाँक 12 अक्टूबर 1949
80. उपर्युक्त, दिनाँक 6 नवम्बर 1949
81. उपर्युक्त, दिनाँक 12 दिसम्बर 1950
82. उपर्युक्त, दिनाँक 28 मार्च 1953
83. उपर्युक्त, दिनाँक 2 फरवरी 1956
84. उपर्युक्त, दिनाँक 11 अगस्त 1957

☆☆☆